मेराज

अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद (पाकिस्तान)
अनुवादक– सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

वह हस्ती पाक है जो रातों–रात अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गई जिसके क़रीब हमने बरकत रखी है ताकि उस बन्दे को हम अपनी क़ुदरत की कुछ निशानियाँ दिखाएं बेशक वही बड़ा सुनने वाला, बड़ा देखने वाला है। (अल–अस्रा–1)

इस आयत में मेराज के वाक़ेए की तरफ़ इशारा है। अरबी ज़बान में ''मेराज'' उस चीज़ को कहते हैं जिसके ज़रिए से बुलन्दी और ऊँचाई हासिल की जाए। उस जगह के लिए भी बोलते हैं जहाँ बुलन्द होकर पहुँचा जाए और ख़ुद बुलन्दी और ऊँचाई भी मुराद लेते हैं लेकिन इस्लामी बोलचाल में इससे मुराद हुज़ूर सरवरे आलम (स0) का आलमे मलकूत की सैर करना और अनवारे इलाही का देखना। यह मेराज हुज़ूर (स0) के मुबारक जिस्म के साथ जागते हुए, रात के वक़्त हुई थी दूसरे सभी नबियों (अ0) के वाक़ेआत को देखने से इसका अन्दाज़ा होता है कि बड़े–बड़े नबियों को किसी न किसी ज़माने में और किसी न किसी शक्ल में यह दर्जा मिला है ज़माने और जगह की क़ैदों और रुकावटों को इनसे दूर कर दिया जाता था, दुनिया के छुपे राज़ और न समझ में आने वाली छुपी बातें खोलकर उनके सामने लाई जाती थीं वह अपने–अपने दर्जे के मुताबिक़ ख़ुदा की नेमतों से फायदा उठाते थे और ख़ुदाई दरबार में हाज़िर होकर इस दुनिया में फिर वापस आ जाते थे। हज़रत इब्राहीम (अ0) को जब नुबुव्वत का दर्जा दिया गया तो इरशाद हुआः

''इसी तरह हम इब्राहीम (अ0) को ज़मीन व आसमान की सलतनत को दिखाते हैं।''

(अन्आम–75)

इसी तरह तौरात (तक्वीन–28) में हज़रत याक़ूब (अ0) का सबअ् नाम के कुएँ से निकलना और हारान की तरफ जाने का ज़िक्र मौजूद है और इस के साथ ही इसी तरह की बातों का बयान भी है जिनको मेराज के एक दर्जे की तरह समझा जाता है।

हज़रत मूसा (अ0) को तूर नाम के पहाड़ पर हक़ की तजल्ली नज़र आई यह उनकी मेराज थी। नबियों और रसूलों के वाक़ेआत इस तरह के हालात और बातों से भरे हुए हैं और हर नबी और रसूल ने अपने रुतबे और दर्जे की मुनासेबत से क़ुदरत की छुपी बातों और छुपे राज़ों को देखा है। अस्ल में ''मेराज'' इन्सान की रूहानी बुलन्दी और अल्लाह से क़रीब होने का दूसरा नाम है इसी वजह से मोमिन की नमाज़ को भी हदीस में ''मेराज'' के लफ़्ज़ से याद किया गया है ''नमाज़ मोमिन की मेराज है'' यह रूहानी बुलन्दी तो ख़ुदा का हर क़रीबी बन्दा अपने दर्जे और मक़ाम के मुताबिक़ हासिल करता रहा है। लेकिन चूँकि हज़रत रिसालतमॉब (स0) पहले और बाद वालों में सबसे अफ़ज़ल थे और सभी नबियों और रसूलों के सरदार थे इस लिए ख़ुदा के पाक दरबार में

आपको वह दर्जा और वह मरतबा मिला जो न किसी मुक़र्रब फ़रिश्ते को मिल सका और न किसी रसूल को हासिल हुआ और आप इस मंज़िल में आगे पहुँचे जहाँ वह्यी के फ़रिश्ते हज़रत जिब्रईल को यह अलफ़ाज़ कहने पड़े ''अगर मैं इस जगह से आगे जाउँगा तो नूर और पाक जलवे की सख़्ती और चमक–दमक को बर्दाश्त न कर सकूँगा।'' सही और एतेबार करने वाली रिवायतों के मुताबिक़ यह मेराज सिर्फ़ एक बार हुई। अल्लामा ज़ुरक़ानी ने लिखा है कि यही आम मुहद्दिसीन, मुफ़स्सिरीन और मुतकल्लिमीन की राए है और सही रिवायतों का बराबर होना भी यही बताता है। हाफ़िज इब्ने कसीर ने भी इसी को सही बताया है। ''मेराज'' का वक़्त तो ख़ुद क़ुर्आन करीम ने बता दिया है कि दिन न था बल्कि रात थी लेकिन तारीख़ में इख़्तिलाफ़ है और किसी मुहद्दिस ने भी इस सिलसिले में कोई सही रिवायत नहीं पेश की है मगर इस बात पर सबका इत्तेफ़ाक़ मालूम होता है कि नबी (स0) के आने के बाद और हिजरत से पहले हुई थी। इस्लामी सीरत लिखने वालों ने इस सिलसिले में कई राए लिखी हैं किसी ने रबीउलअव्वल का महीना लिखा है तो किसी ने रबीउस्सानी का। कोई मेराज को शव्वाल में बताता है कोई रमज़ान और कोई रजब के महीने में कहता है। अल्लामा वाक़दी ने दो रिवायतें लिखी हैं, एक में 17 रमज़ान और दूसरी में 17 रबीउलअव्वल कहा है मगर इब्ने क़ुतैबा और दीनवरी और इब्ने अब्दुलबर रजब के महीने को कहते हैं और अल्लामा राफ़ई और नूदी ने भी इसी को सही कहा है। मुहद्दिस अब्दुल ग़नी क़ुद्स ने भी यही कहा है और साथ ही 27 रजब को ख़ास भी किया है। अल्लामा ज़ुरक़ानी ने लिखा है कि लोगों का इसी पर अमल है।

रसूल (स0) की हिजरत से कितना पहले मेराज हुई इसमें भी मुहद्दिसीन के कई अक़्वाल हैं लेकिन ज़्यादातर इसी तरह है कि यह हिजरत यानी रबीउलअव्वल 1 हिजरी से एक साल या डेढ़ साल पहले हुई थी। अल्लामा बुख़ारी और अल्लामा इब्ने सअ्द ने हिजरत से पहले के वाक़ेआत में मेराज के बयान को सबसे आख़िर में लिखा जिससे इसका हिजरत से ज़्यादा क़रीब होना मालूम हो रहा है।

मेराज के वाक़ेए को बहुत से रिवायत करने वालों ने बयान किया है। अल्लामा ज़ुरक़ानी ने 45 सहाबियों का नाम लिखा है और उन तमाम किताबों के नाम भी लिखे हैं जिनमें उनकी बयान की हुई रिवायतें मौजूद हैं। सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में मुस्तक़िल तौर पर तफ़सील के साथ मेराज के वाक़ेआत का बयान है और उसे सात बड़े सहाबियों के हवाले से रिवायत किया गया है जिनमें अबुज़र ग़फ़फ़ारी (रज़ि0) और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि0) भी शामिल हैं। इस्लाम के शुरुआती ज़माने के बाद वह मुबारक घड़ी आई जो अल्लाह ने उस रिसालत के खिलते हुए फूल और दुनिया के पैदा करने के मक़सद हज़रत सैय्यिदुल मुरसलीन (स0) की सैर अपने पाक और ख़ुदाई दुनिया को देखने के लिए तैय की थी। फ़रिश्तों को हुक्म मिला कि मेरे ख़ास हबीब के लिए आसमानी रास्तों को सजाएं रिज़वाने जन्नत को हिदायत की गई कि आने वाले की अज़मत के मुताबिक़ जन्नत को सजाएं। जिब्रईले अमीन को क़ुदरत का इशारा हुआ कि महबूब के लिए वह सवारी ले जाएँ जो बिजली से ज़्यादा

तेज़ रफ्तार, सूरज की किरनों से तेज़ चलने वाली हो और जो इस बलन्द दर्जा मुसाफ़िर के लायक़ हो जो काएनाती दुनिया से पाक परवरदिगार के दरबार की तरफ बुलाया जा रहा है। काएनात की बन्दिशें टूटने लगीं, आग और हवा की फ़ितरतें टूटने लगीं, माद्दों की तबीअतें बदलने लगीं, फ़ज़ा ने रास्ता दिया। आसमानों ने अपने रास्ते खोलकर अदब से रास्ता दिया, फ़ज़ाओं ने नूर की सवारी को कन्धे पर उठाया, ज़माने और जगह की क़ैद ने इस मुक़र्रब मुसाफ़िर के स्वागत में आँखें बिछाईं।

उधर इलाही वह्‌यी की आवाज़ से सारी ख़ुदाई दुनिया गूँजने लगीः

''वह अल्लाह हर कमी से पाक और पाकीज़ा है जिसने अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे हराम (ख़ाना–ए–काबा) से मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई जिसके क़रीब हमने हर तरह की बरकत तैयार कर रखी है ताकि अपने इस ख़ास बन्दे को अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखाएँ।''

कुछ मुफ़स्सिरीन ने मस्जिदे अक़्सा से बैतुलमुक़द्दस को मुराद लिया है। मगर आलेमुहम्मद (अ0) की तफ़सीर के मुताबिक़ इससे मुराद वह आसमानी मस्जिद है जो ख़ान–ए–काबा की सीध में चौथे आसमान पर है।

देखने में यह बात बड़ी हैरत वाली है कि एक माद्दी जिस्म पलक झपकते ही आसमानों में चला जाए और ख़ुदाई दुनिया की सैर करके फिर वापस आ जाए और इसी वजह से बहुत से लोगों ने जिस्मानी मेराज से इन्कार कर दिया इस लिए कि उनकी नज़रें और उनकी फ़िक्र की उड़ान घिरी हुई थी। सिर्फ उन ही हदों में जो उनकी समझ के अन्दर थे। सवाल बस इतना ही तो है कि थोड़ी सी देर में इतनी लम्बी दूरी कैसे तै हो गई, गर्मी और ठण्डक के हिस्सों से कैसे गुज़रे और फिर जब नई साइंस ने यह बात साफ़ कर दी है कि आसमानों का वजूद ही नहीं है तो एक आसमान से दूसरे और तीसरे, चौथे और फिर उसके बाद आसमानों तक इस शान से तशरीफ ले जाना जिसका रिवायतों में ज़िक्र है कैसे मुम्किन है। आसमानों को मानने वाले पुराने साइंसदानों ने भी गुत्थियाँ और उलझा दीं। जज़्बे मरकज़ी और दूसरी बहसें शुरु हो गईं मगर यह किसी ने न देखा कि मेराज की ख़बर किसने बयान की है और किसने इस तफ़सील को हम तक पहुँचाया है। यह वाक़ेआ तो ख़ुद उस सच्चे पैग़म्बर ने बयान किया था जिसकी अमानत और सच्चाई पर कभी किसी को शक व शुब्हा न पैदा हो सका। इसके बाद सैकड़ों बड़े सहाबियों (रज़ि0) और ताबईन (रह0) ने इस वाक़ेए की रिवायत की और कभी इसमें शक व शुब्हा ज़ाहिर न किया और कभी किसी तरह की अक़्ल में न आने वाली बात की गई आख़िर यह लोग भी तो अक़्ल रखने वाले थे। ग़लत और सही को परखने वाले और बढ़ाचढ़ाकर बयान करने और हक़ीक़त में फ़र्क करने की ख़ूबी रखते थे। फिर कुर्आने करीम साफ़ तौर पर मेराज की ख़बर का एलान कर रहा है। जहाँ तक न समझ में आने वाली बहस का ताल्लुक़ है इसका जवाब सिर्फ यह है कि अगर एक हरकत दूसरी हरकत से तेज़ हो तो कम हरकत तेज़ हरकत के मुक़ाबले में सुकून से बदल जाती है। नबी करीम (स0) जिस तेज़ रफ़्तारी से मेराज में तशरीफ ले गए थे उसके मुक़ाबले में आसमानी हरकत की कोई हैसियत न थी इसलिए यहाँ न समझ में आने वाली चीज़ों की कोई

हैसियत ही नहीं है। अगर आसमान से मुराद सिर्फ बुलन्दी है तो बुलन्दियों की भी क़िस्में मुम्किन हैं जिनको कई आसमानों के नाम से याद किया जा सकता है इसके अलावा आसमान को नीली छतरी कहने वालों ने आज तक यह साबित न किया कि इस के बाद क्या चीज़ है और इस वक़्त आसमानों के मौजूद न होने पर कोई महसूस होने वाली या अक़्ल में आने वाली दलील न पेश कर सके। साइंसी तजुर्बेगाहें सैकड़ों साल से कई ख़यालात और नज़रियात पेश करती रहती हैं। कभी कुछ नज़र आता है तो कभी कुछ और अगर आज एक हक़ीक़त सामने आती है तो कल वह बातिल होकर दूसरी हक़ीक़त सामने लाई जाती है।

मगर क़ुर्आन और हदीसों ने जो पहले कहा था वह अब भी अपनी जगह अटल है। दुनिया वालों के ख़याल मौसम की हवाओं की तरह बदलते रहते हैं मगर ख़ुदा के दरबार से पढ़कर आने वालों की बातों में बदलाव मुम्किन नहीं होता। हवा में जाने वालों ने ज़मीन के ख़िचाव की हदों के बाद जिस फ़िज़ाई क़ैद को देखा है उसकी इससे पहले उन्हें कोई जानकारी नहीं थी।

बड़ी तहक़ीक़ और पसीना बहाने के बाद हमें कुछ ऐटमी ज़र्रे मिल सके जिनसे तेज़ रफ़्तार राकेट बनाकर हमने तेज़रफ़्तारी के हैरत भरे रिकार्ड बनाए और कुछ सेकेण्ड में हज़ारों मील की दूरी तै करने वाली चीज़ें ईजाद कर लीं।

यह तमाम ज़र्रे और ऐटम इस हमारी ज़मीन के न ख़त्म होने वाले ख़ज़ानों का तोहफ़ा हैं जो इन्सान को तहक़ीक़ और तलाश के बाद मिल सके हैं। क्या कोई कह सकता है कि ज़मीन के अन्दर बस इतनी ही चीज़ें थीं और अब इससे ज़्यादा ताक़तवर और तेज़ रफ़्तारी को बढ़ाने वाली कोई दूसरी चीज़ मौजूद नहीं है। इन्सान का इल्म जितना बढ़ता जाएगा उसको काएनात के राज़ों की पहचान होती जाएगी।

नबियों और रसूलों के पहचान और असरदार ताक़तों के सामने हमारे इल्म व तहक़ीक़ की क्या औक़ात और हैसियत है। जिस क़ुदरत वाले ने बेजान ऐटमी ज़र्रों में इतनी ताक़त बख़्शी है क्या वह रसूलों के सरदार, ख़ुदा के नूर, काएनात की पैदाईश के मक़सद और अपने ख़ास हबीब को तेज़ रफ़्तारी का मोजिज़ा नहीं दे सकता! फिर आज तक तहक़ीक़ करने वालों और फ़लसफ़ियों ने तेज़ रफ़्तारी की कोई हद भी नहीं बनाइ है क्या एक सौ साल पहले राकेट की मौजूदा रफ्तार का किसी इन्सान को ख़याल भी होना मुम्किन हो सकता था?............तो बस इसी तरह कुछ ज़माने के बाद यह भी मुम्किन है कि ऐसे राकेट और ऐसी चीज़ें ईजाद कर लिये जाएं जिनकी तेज़ रफ्तारी के मुक़ाबले में आज की तेज़ रफ़्तारी की कोई हैसियत ही न हो और किसी तरह का मुक़ाबला ही बाक़ी न रहे। रौशनी की रफ़्तार, आवाज़ की तेज़ रफ़्तारी, सैय्यारों की तेज़ हरकत और सबसे ज़्यादा ख़ुद हर इंसान की नज़र की तेज़ी की कोई इन्तेहा है! इधर आँख खुली और नूर के मुसाफ़िर के सामने से पर्दा उठा कि एक लम्हे में उसके क़दम करोड़ों मील की दूरी तै करके ज़ुहरा, अतारद, ज़ुह्ल और मिर्रीख़ से भी बहुत दूर–दूर सितारों तक पहुँचने लगे और आँख की नन्हीं से पुतली में बड़ी काएनात समाने लगी। यह सब बनाने वाले की क़ुदरत के करिश्मे हैं जो हर समझदार इन्सान के लिए नसीहत लेने का रास्ता हैं।

इन सभी इलाही निशानियों को देखने के बाद और दुनिया की मख़लूक़ की मामूली बेबिसात चीज़ों का असर और तेज़ रफ़्तारी देखने के बाद ख़ुदाई क़ुदरत और दुनिया के पैदा करने वाले की न घेरे जाने वाली हुकूमत पर थोड़ा सा ग़ौर करने वाला कभी इससे इन्कार की हिम्मत नहीं कर सकता कि मेराज का वाक़ेआ इसलिए ठीक नहीं है कि इसका होना दुनिया के फितरती क़ानून के ख़िलाफ़ है। ऑहज़रत (स0) के इशारों से चाँद का दो टुक्ड़े हो जाना, हाथों पर आकर कंकरियों का तस्बीह पढ़ना, धूप में मुबारक सर पर बादलों का साया करना, रौशनी में मुबारक जिस्म का साया सामने न आना, पत्थर पर पैरों के निशान का उभरना और नर्म ज़मीन पर पैरों के निशानों का पैदा न होना, मग़रिब में डूबे हुए सूरज का पलट आना और इसी तरह के हज़ारों मेजिज़े थे जो अल्लाह ने उस मलकूती रूह और रब्बानी नूर को दिये थे। मेराज भी उन ही मोजिज़ों में से एक बड़ा मोजिज़ा था जो आपकी नबुवत और रिसालत पर क़यामत तक गवाह रहेगा।

अल्लाह को मालूम था कि इन्सान रफ़्तार को बढ़ाने और फ़िज़ाओं पर क़ाबू हासिल करने की कोशिश करेगा। इसलिए उसने अपने आख़री नबी को एक ऐसा तेज़रफ्तारी का मोजिज़ा दे दिया और काएनात की फ़िज़ा और ख़ला की न घेरे जाने वाली दूरियों पर ऐसा क़ाबू दे दिया जो क़यामत तक इन्सानी अक़्ल और इन्सानी सोच की उड़ान के लिए मोजिज़ा बना रहेगा। कुर्आने करीम का एलान सच्चा है तो मेराज का वाक़ेआ भी शक व शुब्हे से अलग है। पैग़म्बर (स0) अमानतदार और सच्ची बात कहने वाले थे तो आपका बयान भी यक़ीनन सही व ठीक है। बड़े सहाबी और बड़े ताबईन और इस्लाम के बड़े तहक़ीक़ और फ़िक्र करने वालों की बड़ी शख़सियतों ने इस वाक़ेए को सुन कर हमेशा सर झुका दिया और मेराज के अक़ीदे को अपने ईमान का हिस्सा समझा। यह लोग रसूल (स0) के दौर से जुड़े हुए या क़रीब थे और यह यूनानी और ज़मीन के दूसरे हिस्सों के सभी ख़यालों और सोंचों को पूरी तरह जानते–समझते थे मगर कभी इन्हें इसमें शक न हुआ। रसूल (स0) की पैदाईश अल्लाह ने ख़ास नूर से फरमाई थी, वह क़ाएनात के बनाने की वजह थे इसी नूर की किरनों से नबियों और रसूलों की पैदाइश हुई, इसी नूर के फैलने से सितारों में रौशनी आई, और इसी नूर के साए से काएनात के बेजान ज़र्रों में ज़िन्दगी की उमंगें उभरने लगीं। काएनात की कौन सी मख़लूक़ है जो इस नूर के सदक़े में न बनी हो तो जब किरनों में इतनी ताक़त और तेज़ रफ़्तारी है तो ख़ुद नूर के चश्मे की ताक़त का कौन अन्दाज़ा कर सकता है। जब साए में यह कशिश है तो ख़ुद इस पूरे नूर को देखने की क्या हद होगी और जब पैदा होने वाली मख़लूक़ में यह असर हैं तो जो काएनात के पैदा किये जाने का मक़सद हो और काएनात के ईजाद करने और ज़मीन व आसमान के पैदा करने का वसीला हो उसका असर और जादुई ताक़तों की हदों का अन्दाज़ा कौन कर सकता है–

''गर अर्ज़ व समा की महफ़िल में लौलाक लमा का शोर न हो
यह रंग न हो गुलज़ारों में यह नूर न हो सैय्यारों में।''